4th BATTALION (OUTRAM'S) THE RAJPUTANA RIFLES

4th Battalion (Outram's) The Rajputana Rifles is one of the oldest infantry battalions of the Indian Army. The Battalion completes 200 years of its raising in 2020 which is a rare milestone for the reason that ever since its raising, the Battalion has never been disbanded or discontinued.

The Battalion was raised on 26th May, 1820, from the brave men who fought the Battle of Kirkee in November, 1817, as the First Battalion of the 12th Regiment of the East India Company Native Army. In the reorganization in 1903, the Battalion donned the name of its most distinguished officer, Sir James Outram and was designated the 123rd Outram's Rifles. Post-independence, the Battalion was renamed the 4th Battalion (Outram's) The Rajputana Rifles.

Before independence, the Battalion fought in wars in Persia, Burma, Afghanistan, Palestine and parts of North Africa. It actively participated in both World Wars. The enviable award tally of the Battalion includes two Victoria Crosses, the highest gallantry award of the United Kingdom. The Battalion also won 23 Battle/ Theatre honours during the pre-independence era.

One of the recipients of Victoria Cross was Company Havildar- Major Chhelu Ram (1905-1943). On the night of 19th/ 20th April, 1943, at Djebel Garci, Tunisia, the advance of a Battalion of the 5th Indian Infantry Brigade was held up by machine-gun and mortar fire. Company Havildar-Major Chhelu Ram dashed forward with a tommy-gun and killed the occupants of a post and then went to the aid of his company commander who had become a casualty. While doing so, he was himself wounded, but taking command of the company, he led them in hand-to-hand fighting. He was again wounded, but continued rallying his men until he died. An image of the father, wife and son of Company Havildar-Major Chhelu Ram, V.C., 4th Battalion (Outram's) 6 Rajputana Rifles, features on the Brochure.

Post-independence exploits of the Battalion are as follows:

(i) **1948 'Op Polo' Annexation of Hyderabad-** The Battalion was instrumental in the successful police action in Hyderabad in 1948 and stayed in Hyderabad till 1951.

(ii) **1962 United Nations Emergency Force (UNEF) Congo-** As part of UNEF in Congo, Lieutenant Ved Prakash of the unit was awarded the Maha Vir Chakra (posthumously) for his gallant actions.

(iii) **1965 India-Pakistan War-** The Battalion earned the Battle Honour "Charwa" and the Theater Honour "Punjab" in the Sialkot Sector.

(iv) **1971 India-Pakistan War-** For its contribution in 'OP Cactus Lily' at Uri, the Battalion was awarded the Battle Honour "Uri".

(v) **1991 counter insurgency operations in Jammu and Kashmir-** For its exemplary services in 'OP Rakshak', it was awarded the COAS Unit Citation and the Governor's Appreciation. It was amongst the first Battalions to be conferred with COAS Unit Citation after the award was instituted in 1991.

(vi) **GOC-in-C South Western Command Unit Appreciation 2011-** The Battalion was conferred with 'GOC-in-C South Western Command Unit Appreciation' for its commendable performance in Faizabad in 2011.

(vii) **GOC-in-C Western Command Unit Appreciation 2016-** The Battalion was conferred with 'GOC-in-C Western Command Unit Appreciation' for its appreciable services in Kharian, Miran Sahib, Jammu, in 2016.

The Battalion continues to serve the nation with pride, passion and devotion on the Line of Control.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on 4th Battalion (Outram's) The Rajputana Rifles on its 200th anniversary.

Credits:

Stamp/ FDC/ Brochure	:	Shri Brahm Prakash
Cancellation Cachet	:	Smt. Alka Sharma
Text	:	Based on information received from the proponent

डाक विभाग
Department of Posts

चतुर्थ बटालियन (उ़टरम्स) राजपूताना राइफल्स
4th Battalion (Outram's) The Rajputana Rifles
1820-2020

"The father, wife and son of Company Havildar-Major Chhelu Ram, V.C., 4th Battalion (Outram's) 6 Rajputana Rifles"

विवरणिका BROCHURE

चतुर्थ बटालियन (उटरम्स) राजपूताना राइफल्स

चतुर्थ बटालियन (उटरम्स) राजपूताना राइफल्स, भारतीय सेना की सबसे पुरानी इन्फैन्ट्री बटालियनों में से एक है। यह बटालियन वर्ष 2020 में अपनी स्थापना के 200 वर्ष पूरे करेगी जो अपने आप में एक कीर्तिमान है क्योंकि अपनी स्थापना के बाद से यह बटालियन हमेशा अस्तित्व में रही है और विगत दो सौ वर्षों के दौरान इसे कभी भी भंग या विरत नहीं किया गया।

इस बटालियन की स्थापना 26 मई, 1820 को ईस्ट इंडिया कंपनी नेटिव आर्मी की 12वीं रेजिमेंट की प्रथम बटालियन के रूप में उन बहादुर सैनिकों से की गई जिन्होंने नवम्बर, 1817 में किर्की का युद्ध लड़ा था। वर्ष 1903 में पुनर्गठन में, बटालियन ने अपने सर्वाधिक प्रतिष्ठित अधिकारी, सर जेम्स उटरम का नाम ग्रहण किया और इसका नाम 123वीं उटरम्स राइफल्स हो गया। आज़ादी के बाद, इसका नाम चतुर्थ बटालियन (उटरम्स) राजपूताना राइफल्स हो गया।

आज़ादी से पहले, बटालियन ने फ़ारस, बर्मा, अफगानिस्तान, फिलिस्तीन और उत्तर अफ्रीका के कुछ हिस्सों में युद्ध लड़े। दोनों विश्व युद्धों में इसने सक्रिय रूप से भाग लिया। बटालियन द्वारा प्राप्त स्पृहणीय पुरस्कारों में दो विक्टोरिया क्रॉस शामिल हैं जो यूनाइटेड किंगडम का उच्चतम वीरता पुरस्कार है। बटालियन ने स्वतंत्रता–पूर्व 23 युद्ध / युद्ध-क्षेत्र सम्मान अर्जित किए।

विक्टोरिया क्रॉस प्राप्त करने वालों में एक कंपनी हवलदार - मेजर छेलू राम (1905–1943) थे। 19 / 20 अप्रैल, 1943 की रात को जेबेल गार्सी, ट्यूनिशिया में 5वीं भारतीय इन्फैन्ट्री ब्रिगेड की बटालियन को मशीनगन और मोर्टार गोलाबारी ने आगे बढ़ने से रोक दिया था। कंपनी हवलदार - मेजर छेलू राम टोमी–गन सहित आगे बढ़े और चौकी से गोलियां बरसा रहे सैनिकों को मार गिराया और तब अपने कंपनी कमांडर की सहायता करने पहुंचे, जो घायल हो चुके थे। ऐसा करते हुए, वे स्वयं ज़ख्मी हो गए, लेकिन उन्होंने कंपनी की कमान संभालते हुए निहत्थे लड़ाई में नेतृत्व किया। वे पुनः ज़ख्मी हो गए, लेकिन अपने सैनिकों के साथ डटे रहे, जब तक कि वे मृत्यु को प्राप्त नहीं हो गए। कंपनी हवलदार - मेजर छेलू राम, वी.सी., चतुर्थ बटालियन (उटरम्स) 6 राजपूताना राइफल्स के पिता, उनकी पत्नी और पुत्र के चित्र विवरणिका पर चित्रित हैं।

आज़ादी के बाद, बटालियन की प्रमुख उपलब्धियां निम्नानुसार हैं:–

(i) **1948 'ऑपरेशन पोलो' हैदराबाद का विलय** – बटालियन ने हैदराबाद में 1948 में सफल पुलिस कार्रवाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और 1951 तक हैदराबाद में रही।

(ii) **1962 संयुक्त राष्ट्र आपातकालीन दल (यूएनईएफ) कांगो** – कांगो में यूएनईएफ के भाग के रूप में, यूनिट के लेफ्टिनेंट वेद प्रकाश को उनकी बहादुरी के लिए (मरणोपरांत) महावीर चक्र प्रदान किया गया।

(iii) **1965 भारत–पाकिस्तान युद्ध** – बटालियन को सियालकोट सेक्टर में युद्ध सम्मान "चारवा" और युद्ध–क्षेत्र सम्मान "पंजाब" प्राप्त हुए।

(iv) **1971 भारत–पाकिस्तान युद्ध** – उरी में "ऑपरेशन कैक्टस लिली" में योगदान के लिए इसे युद्ध सम्मान "उरी" प्रदान किया गया।

(v) **1991 में जम्मू और कश्मीर में उग्रवाद विरोधी अभियान** – ऑपरेशन रक्षक में अपनी अनुकरणीय सेवा के लिए बटालियन को सीओएएस यूनिट प्रशस्ति–पत्र तथा राज्यपाल का प्रशस्ति–पत्र प्रदान किया गया। यह बटालियन 1991 में सीओएएस प्रशस्ति–पत्र की स्थापना के बाद प्राप्त करने वाली पहली बटालियनों में थी।

(vi) **जीओसी–इन–सी दक्षिण–पश्चिमी कमान यूनिट प्रशस्ति–2011**– बटालियन को फैजाबाद में 2011 में इसके सराहनीय कार्यों के लिए 'जीओसी–इन–सी दक्षिण–पश्चिमी कमान यूनिट प्रशस्ति–पत्र प्रदान किया गया।

(vii) **जीओसी–इन–सी पश्चिमी कमान यूनिट प्रशस्ति–2016** – बटालियन को खरियां, मिरन साहिब, जम्मू में 2016 में इसके उत्कृष्ट कार्यों के लिए 'जीओसी–इन–सी पश्चिमी कमान यूनिट प्रशस्ति–पत्र प्रदान किया गया।

वर्तमान में गर्व, उत्साह और कर्तव्यनिष्ठा के साथ बटालियन नियंत्रण–रेखा पर राष्ट्र की सेवा में रत है।

चतुर्थ बटालियन (उटरम्स) राजपूताना राइफल्स की 200वीं वर्षगांठ पर एक स्मारक डाक–टिकट जारी करना डाक विभाग के लिए प्रसन्नता का विषय है।

आभार:

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका : श्री ब्रह्म प्रकाश

विरूपण कैशे : श्रीमती अलका शर्मा

पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सूचना के आधार पर

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	600940
Stamps Printed	:	600940
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य ₹ 5.00